राईजिंग नेचर फाउण्डेशन

Rising Nature

प्रगति आख्या वर्ष: 2023-24

प्रगति आख्या वर्ष: 2023-24

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' पंजी० कार्यालय- मो० मिर्धान, बीसलपुर रोड, फरीदपुर, जिला बरेली (उ०प्र०) एवं प्रशासनिक कार्यालय- 427, इन्दिरा नगर, बरेली (उ०प्र०). इंडियन ट्रस्ट एक्ट 1882 के अंतर्गत पंजीकृत एक समाजसेवी ट्रस्ट/गैर सरकारी संगठन / एन०जी०ओ० है। चुकि संस्थान अपने स्थापना वर्ष से ही समाज के उपेक्षित, दलित,पिछडे वर्ग,विकलांगो,अनुसूचित जाति व जनजाति एवं अन्य सामान्य वर्ग के कल्याण तथा उत्थान के लिए अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रयासरत है।

इसी क्रम में 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' रसायनिक खेती से होने वाले नुकसानों को मददेनजर रखते हुए किसान भाईयों को प्रशिक्षित करते हुए,जैविक खेती हेतु प्रेरित करते हुए एक पायलट परियोजना "जैविक कृषि विकास परियोजना" का भी सफल संचालन अपने स्थापना वर्ष से ही कर रही है। इसके साथ ही महिला सशक्तिकरण व राष्ट्रीय एकीकरण को भी बढ़ावा दे रही है। वर्ष 2023-24 में कुल प्राप्ति व भुगतान 5731704.00 रूपये रहा है। संस्थान द्वारा वर्ष 2023-24 में किये गये सामाजिक कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:.....

1- जैविक कृषि विकास परियोजना:- संस्था द्वारा इस परियोजना पर वर्ष 2023-24 में 960558.00 रूपये खर्च किए गये। राष्ट्रहित व जनहित में ऑर्गेनिक कृषि के दीर्घावधि लाभों को देखते हुए ऑर्गनिक/जैविक कृषि के संवर्धन के लिए संस्थान ने "जैविक कृषि विकास परियोजना" नामक पॉयलट प्रोजेक्ट का शुभारम्भ अपने स्थापना के समय से ही किया था। जोकि भारत को रासायनिक हरित क्रान्ति से सदाबहार जैविक हरित क्रान्ति की ओर अग्रसारित कराने हेतु कृत संकल्पित है।

"राईजिग नेचर फाउण्डेशन" ने "जैविक कृषि विकास परियोजना" का सहयोगी संस्थाओं (1) ऋतुहर्ष नेचर फाउंडेशन, 09,बग्गा कॉलोनी, सरस्वती नगर, बदायूं रोड,

बरेली, उ. प्र., (2) साईनाथ जागृति ग्रामीण विकास संस्थान,सेक्टर-स,बुद्ध बिहार कालोनी, एल०आई०जी०बी०-175, तारामण्डल रोड, गोरखपुर, उ०प्र० एवं (3) सोसाइटी ऑफ राईजिंग यूनिवर्स,कर्मचारी नगर, नियर स्टेट बैंक, मिनी बाईपास रोड, बरेली, उ०प्र० के माध्यम से बस्ती मण्डल और पीलीभीत व कासगंज जनपद में शुभारम्भ कराया और बस्ती,संतकबीर नगर एवं पीलीभीत जनपदों में बेहतरीन रिजल्ट प्राप्त किये।

बस्ती व पीलीभीत में अलग-अलग ब्लॉको में पांच -पांच ग्राम पंचायतों पर एक-एक जैविक कृषि मित्र को नियुक्त करके जैविक कृषि क्लब की स्थापना कराकर किसान भाईयों को रासायनिक खेती से नुकसान व जैविक खेती की आवश्यकता को समझाते हुए उन्हें विषमुक्त जैविक खेती के लिए जागरूक किया गया। इसके अतिरिक्त किसान भाईयों को जैविक कृषि की विभिन्न विधाओं की जानकारी दी गई कि किस प्रकार से आप अपने आस-पास की चीजों से कृषि के लिए आवश्यक शक्तिशाली जैविक खाद बना सकते हैं और जो किसान भाई नही बना सकते हैं. उन आर्गेनिक खादों की उपलब्धता को सब्सिडी पर जैविक कृषि क्लब के माध्यम से सुगम बनाया गया।

"जैविक कृषि विकास परियोजना" के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक संसाधन जैसे मानव संसाधन हेतु प्रशिक्षण देने वाले निपुण प्रशिक्षक/विशेषज्ञ उपलब्ध है एवं आवश्यकतानुसार नियुक्त भी किये जाते रहे हैं। इस कार्य में सहयोग देने के लिए देश

के विभिन्न सस्थानों के कृषि वैज्ञानिक,उत्कृष्ठ किसान, प्रयोगधर्मी किसान, कृषि विशेषज्ञ, लेखक आदि लोग भी अपना यथोचित सहयोग देकर "राईजिंग नेचर फाउण्डेशन" के इस प्रोग्राम कोलाभान्वित कर रहे हैं।

चूंकि भारत में जैविक खेती बहुत ही किफायती है। इसमें फसलों के रोपण के लिए महंगे उर्वरकों, कीटनाशकों हाइब्रिड बीजों का उपयोग नहीं किया जाता है। इसका कोई खर्चा नहीं है। सस्ते और स्थानीय आदानों के उपयोग से किसान निवेश पर अच्छा लाभ कमा सकता है। यह भारत में जैविक खेती के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक है। भारत और दुनिया भर में जैविक उत्पादों की भारी मांग है और निर्यात के माध्यम से अधिक आय

अर्जित कर सकते हैं। भारत में जैविक खेती बहुत ही पर्यावरण के अनुकूल है। इसमें उर्वरको और रसायनों का उपयोग नही किया जाता है। बिना किसी केमिकल के इस्तेमाल से फसल की गुणवत्ता बेहतर रहती है।विभिन्न कृषक गोष्ठीयों के माध्यम से किसान भाईयो को समझाया गया कि आप लोगो के रासायनिक उर्वरकों के अधिकाधिक प्रयोग करने से मिटटी के प्राकृतिक तत्व नष्ट होते जा रहे हैं और धरती बंजर होने के कगार पर पहुंच रही है। ऐसे में अब किसान भाईयों को प्राकृतिक जैविक खेती करनी चाहिए। इसके साथ-साथ किसान भाईयों को गोबर व गोमूत्र से कीटनाशक व मोटे अनाज उत्पादन के लिए भी प्रेरित किया गया।

2- पशु संरक्षण जागरूकता अभियान: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 101691.00 रूपये खर्च किये गये हैं। इस कार्यक्रम का जनपद कासगंज और पीलीभीत के ग्रामीण परिक्षेत्रों में सफल आयोजन किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में किसान भाईयों को पशुओं के स्वास्थ्य, सुरक्षा व उनके पालन पोषण तथा उनकी उपयोगिता के बारे में शिविर लगाकर जानकारी दी गई कि पशुधन किस प्रकार जैविक खेती का आधार भी है और किसान भाईयों की नियमित आजीविका का एक सफल साधन है। लोगो को जानवरों पर होने वाले अत्याचार का विरोध करने को भी प्रेरित किया और मांसाहारी लोगो से शाकाहारी बनने की भी अपील की गई।

3- स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 90808.00 रूपये खर्च किये गये। संस्थान द्वारा जनसामान्य व समाज के हित में विभिन्न बीमारियों इनके कारणों और रोकथाम के बारे में शिविर लगाकर ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूक किया गया। जनपद शाहजहांपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे-छोटे बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें साफ-सफाई व स्वय को साफ सुथरा रखने के बारे में बताया गया। चूंकि कोरोना वायरस का प्रकोप एक महामारी का रूप ले चुका है। अतः फेस मास्क,एक दूसरे से दूरी बनाकर रखना,कच्चे घर की गोधन से लिपाई, खाने पीने से पहले हाथ धोना इत्यादि विचारों को गम्भीरता से प्रस्तुत किया गया तथा मास्क की उपयोगिता बताते हुए, मास्कों का निःशुल्क वितरण भी कराया गया। इसके अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओ को हाईजीन के बारे में जानकारी डी गईं तथा महिलाओ को निशुल्क सेनिटरी पैड उपलब्ध कराये गए।

4- उपभोक्ता संरक्षण कार्यक्रम: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 37000.00 रूपये खर्च किये गये हैं। भारत में हर साल 24 दिसम्बर को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस के रूप में मनाया जाता है। उपभोक्ता जागरूकता, उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उपभोक्ताओं को अपने अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उपभोक्ता संरक्षण उपाय, उत्पादों एवं सेवाओं के उपयोग से जुडे स्वास्थ्य और सुरक्षा सम्बन्धी जोखिमों को कम करने में मदद करते हैं। बरेली के ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम संचालित किया गया। ग्रामीणों को सरकार द्वारा उपभोक्ताओं को मिलने वाली सहायता के बारे में कैम्प के आयोजन द्वारा बताया गया। क्योंकि अधिकतर ग्रामीण ही इसके शिकार होते हैं। घटतौली, मानक स्तर की सामग्री और उचित मूल्य आदि के प्रति उन्हें सचेत किया गया।

5- औषधीय / सगंध पौध कृषिकरण जागरूकता कार्यक्रम: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 777554.00 रूपये खर्च किये गये। भारत वर्ष में औषधीय एवं सगंध पौधों का इतिहास काफी पुराना रहा है। क्योंकि चिकित्सीय एवं सुगंध हेतु इन पौधों का उपयोग होता रहा है। इनके व्यापक एवं व्यावसायिक कृषिकरण की तरफ जन सामान्य में जितनी रूचि वर्तमान में जागृत हुई है। उतनी सम्भवतया पहले कभी नही हुई थी। वर्तमान में जहां कृषक परम्परागत फसलों को

छोड़कर औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती की ओर आकर्षित होने लगे हैं। वही उच्च शिक्षा प्राप्त ऐसे युवक भी जो अभी तक खेती-किसानी के कार्य को केवल कम पढ़े लिखे लोगों का व्यवसाय मानते थे, औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती अपनाकर गौरवान्वित महसूस करने लगे हैं।

‘राईजिंग नेचर फाउण्डेशन’ ने बरेली और पीलीभीत, रामपुर जनपदों के परिक्षेत्रों में कृषक गोष्ठियों का आयोजन करके किसान भाईयों को औषधीय और सगंध फसलों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और विभिन्न औषधीय /सगंध फसलों के बीजों एव पौध सामग्री की उपलब्धता को सुगम बनाने के लिए किसान भाईयों को औषधीय/सगंध फसलों के अनुबंधित कृषिकरण के लिए जागरूक किया। इस प्रकार ‘राईजिंग नेचर

फाउण्डेशन' ने किसान भाईयों को औषधीय / सगंध पौधों के कृषिकरण के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ उचित मूल्य प्रस्तुत करते हुए तकनीकी रूप से किसान भाईयों का सहयोग प्रदान किया गया।

Rising Nature

6- महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 158629.00 रूपये खर्च किये गये। निसंदेह सदिन प्रतिदिन की भिन्न-भिन्न भूमिकाएं जीते हुए, महिलायें किसी भी समाज का स्तम्भ हैं। हमारे आस-पास महिलायें, सहृदय बेटियां,संवेदनशील माताएं सक्षम सहयोगी और अन्य कई भूमिकाओं को बड़ी कुशलता व सौम्यता से निभा रही हैं।

लेकिन आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज उनकी भूमिका को नजरअंदाज करता है। इसके चलते महिलाओं का बड़े पैमाने पर असमानता उत्पीडन, वित्तीय निर्भरता और अन्य सामाजिक बुराईयों का खामियाजा भुगतना पड़ता है। सदियों से ये बंधन महिलाओं को पेशेवर व व्यक्तिगत ऊचाईयों को प्राप्त करने से अवरूद्ध करते रहे हैं।

उक्त के सम्बन्ध में 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' द्वारा जनपद शाहजहांपुर में महिला दिवस के अवसर पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान के अध्यक्ष श्री डी०पी० सिंह भदौरिया ने बताया कि महिलाओं को किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना उचित स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच होनी चाहिए। जब महिला सशक्तिकरण की बात आती है तो स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र महत्वपूर्ण होता है। पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाए प्रदान करने से जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं का निरंतर सुधार सुनिश्चित होगा। महिला सशक्तिकरण का मुख्य लाभ समाज से जुड़ा हुआ है। विशेष वक्ता डा० पी०एस० पाण्डेय ने कहा अगर हम लोगों को अपने देश को एक शक्तिशाली देश बनाना है तो उसके लिए हम लोगों को समाज की महिलाओ को भी शक्तिशाली बनाने की जरूरत है। महिलाओं के विकास का मतलब होता है कि आप एक परिवार का विकास का कार्य कर रहे हैं। अगर महिला शिक्षित होगी तो वो अपने परिवार को भी पढ़ा-लिखा बनाने की कोशिश करेगी। जिसके चलते हमारे देश को पढ़े-लिखे नौजवान मिलेंगे,जो कि देश की तरक्की में अपना योगदान दे सकेंगे।

7- **विश्व पर्यावरण दिवस:** संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 81457.00 रूपये खर्च किये गये। संस्थान द्वारा 5 जून को पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में देवचरा के ग्राम भुड़िया में एक जन सभा का आयोजन कवि देवेन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हेतु पूरे विश्व में मनाया जाता है। सभा में ग्रामीणों को बताया गया कि जिन फलो का प्रयोग करने के बाद उनके बीजों को गोबर की गेंद बनाकर उसके बीच में रखकर हमे खाली भूमि में डाल देना चाहिए।

हम लोगों को अपने घर या घर के आस-पास सम्भव हो तो कुछ पेड़ों का रोपड़ अवश्य करना चाहिए। संस्थान के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री अभिहर्ष जी ने बताया कि मानव द्वारा अपने हित के लिए लगातार पृथ्वी के संसाधनों का दोहन करने के कारण होने वाली क्षति को रोकने और पृथ्वी को बचाने के लिए पर्यावरण दिवस की शुरूआत की गई। मानव ने पिछले 200 वर्षों में अपनी उन्नति और प्रगति के नाम पर प्रकृति का शोषण किया है। उसी का परिणाम है जो आज हम अपने पर्यावरण में परिवर्तन देख रहे हैं। यदि इस पर अब भी दृढता के साथ विचार नहीं किया गया तो गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे।

8- धीरपुर ऑर्गेनिक फार्म: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 228052.00 रूपये खर्च किये गये। किसान भाईयों को जैविक खेती की अवधारणा को सही प्रकार से समझाने और आसान बनाने एवं अपनी आय के संवर्धन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने मझगवाँ विकास खण्ड के अंतर्गत धीरपुर ग्राम सभा के परिक्षेत्र में एक 30 बीघा का कृषि फार्म किराये पर लिया गया। जहां पर कृषि विविधीकरण और सहफसली से सम्बन्धित तौर तरीकों के साथ-साथ औषधीय एवं सगंध फसलों को भी ऑर्गेनिक आधार पर उत्पादित करके प्रदर्शित किया गया। जिसका किसान भाईयों पर सीधा और प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा तथा उन्होने जैविक कृषि को अपनाने का निर्णय लिया। इस प्रकार इस कार्यक्रम के दूरगामी परिणाम प्राप्त हुए।

9- कोविड-19 जागरूकता कार्यक्रम: संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2023-24 में 28000.00 रूपये खर्च किये गये। मीरगंज तहसील के परिक्षेत्रों में ग्राम पंचायत धनतिया, समसपुर, दूरिया इत्यादि में कैम्प लगाकर कोविड-19 से बचाव व सुरक्षा के बारे में जानकारी दी गई। अभियान के तहत लोगों को कोविड-19 महामारी से बचाव के उपायों, टीकाकरण और दवाई भी, कड़ाई भी के संदेश के प्रति जागरूक करने के लिए सचल प्रदर्शनी, माइकिंग, पॅफलेट, स्टीकर और पोस्टर के माध्यम से समझाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी इलाकों में लोगों को दूरी के नियम का पालन करने, मास्क का प्रयोग करने और हाथों को बार-बार धोने, सैनिटाईजर का इस्तेमाल करने और टीका अवश्य लगवाने के प्रति जागरूक किया गया।

10- खेड़ा नवादा आर्गेनिक फार्म :- संस्थान द्वारा इस प्रोग्राम पर वर्ष 2023-24 में कुल 512667.00 रूपये खर्च किए गए। संस्थान द्वारा आर्गेनिक फार्मिंग और औषधीय /सगंध फसलों के कृषिकरण को किसानों के बीच प्रोमोट करने के उद्देश्य से तथा वास्तविक रूप मे दिखाने के लिए जनपद शाहजहांपुर के तिलहर तहसील के परिक्षेत्र में खेड़ा नवादा ग्राम पंचायत में एक 15 बीघा का फार्म किराये पर लिया गया और कृषि विविधीकरण व औषधीय फसल रोसेला और अश्वगंधा की कृषि को प्रमोट किया गया। औषधीय / समंध फसलों के कृषिकरण में प्राकृतिक आपदा और बीमारियों का खतरा कम और कभी-कभी न के बराबर होता है और परम्परागत फसलों की अपेक्षा उच्च आय की प्राप्ति किसान भाईयों को होती है।

11- कृषि वानिकी जागरूकता प्रोग्राम :- संस्थान द्वारा इस प्रोग्राम पर वर्ष 2023-24 में कुल 768915.00 रूपये खर्च किए गए। इस प्रोग्राम में सभी कृषि मित्रो को बताया जाता है कि "प्रकृति से प्रेरित, कृषि वानिकी एक ऐसी खेती प्रणाली है जो पेड़ों और कृषि (फसल या पशुधन) को जोड़ती है। ये सभी अलग-अलग तत्व एक दूसरे के पूरक हैं। इससे लचीलापन बढ़ता है, जैव विविधता बढ़ती है और मोनोकल्चर प्रणाली की तुलना में भूमि का अधिक उत्पादक, लाभदायक और जलवायु-अनुकूल उपयोग होता है।"

हम ऐसा क्यों करते हैं? 'जलवायु परिवर्तन, जानवरों और पौधों का निरंतर विलुप्त होना, कृषि योग्य भूमि का क्षरण और गर्म क्षेत्रों में रेगिस्तानों का फैलना। वैश्विक स्तर पर, मानवता जबरदस्त पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है जो वर्तमान में हमारे द्वारा उपलब्ध भूमि के उपयोग के तरीके से निकटता से संबंधित हैं। भूमि के प्रबंधन के हमारे वर्तमान तरीके, भविष्य में इसकी उपलब्धता और उर्वरता को खतरे में डालते हैं और इसके साथ ही हमारी भलाई और समृद्धि को भी।'

कृषि वानिकी के 10 प्रमुख लाभ:-

1- कृषि उत्पादकता में वृद्धि।

2- भुखमरी और गरीबी को कम करना।

3- महिला सशक्तिकरण।

4- जैव विविधता का समर्थन,

5- समृद्ध मिट्टी और पानी की उपलब्धता।

6- कीट नियंत्रण।

7- ग्लोबल वार्मिंग का प्रतिकार।

8- लचीलापन और सूक्ष्म जलवायु विनियमन।

9- मनोरंजन और स्वास्थ्य।

10- पशु कल्याण और मांस की गुणवत्ता।

12- यूनिसेफ पी2ई प्रोग्राम:- संस्थान द्वारा इस प्रोग्राम पर वर्ष 2023-24 में 949735.00 रुपये खर्च किये। 'राइजिंग नेचर फाउंडेशन' इस प्रोग्राम को पैन इंडिया लेवल पर दिसंबर 2023 से कर रहा है और 31, मार्च 2024 तक संस्थान ने इस कार्यक्रम को 100000 युवाओं तक पहुंचाया है और अक्टूबर 2025 तक संस्थान इस प्रोग्राम को सुचारु रूप से करता रहेगा, और अधिक से अधिक युवाओं तक पूछने के लिए प्रयास करता रहेगा।

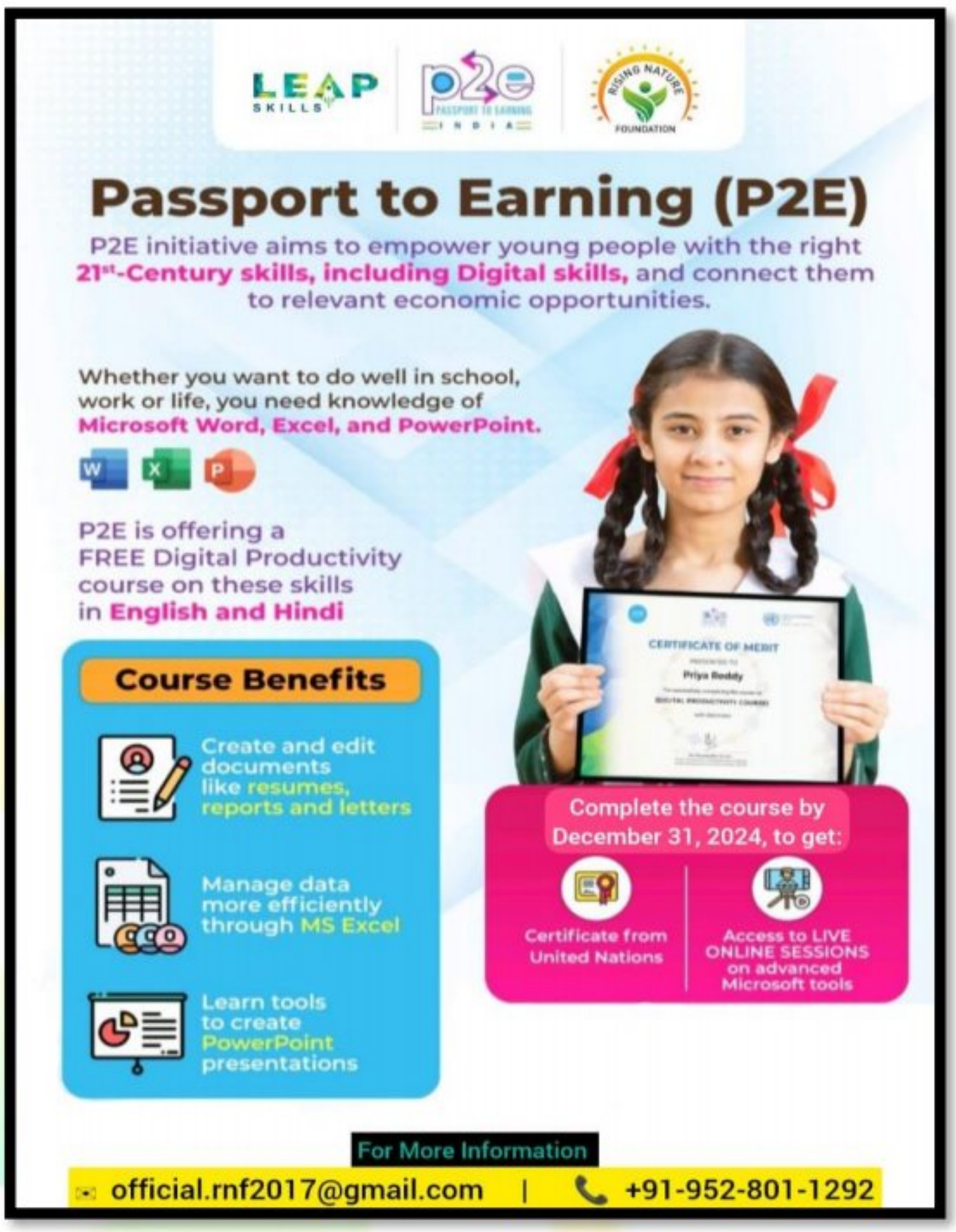

ये प्रोग्राम 14-29 साल तक के युवाओं के लिए है, जो 1:30 से 2:00 घंटे की अवधि में पूरा होता है और जो कि हम ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (पी2ई) के माध्यम से इस प्रोग्राम में लॉगइन करते है और "डिजिटल प्रोडक्टिविटी" नामक कोर्स को सफलतापूर्वक पूरा करने के उपरान्त इसमे उन्हें कंप्यूटर से जुड़ी सभी निम्न चीज़ों के बारे में बताया जाता है जो कि आज के समय में सभी को मालूम होना जरूरी है। इस प्रोग्राम के पूरा होने के तुरंत बाद यूनिसेफ की ओर से ई-सर्टिफिकेट मिलता है।इस अभियान से छात्रों को क्या मिलेगा:- *(लाभ)*

1. इन पाठ्यक्रमों को NIIT के विशेषज्ञों द्वारा डिज़ाइन किया गया है। इस पाठ्यक्रम में वीडियो, पीडीएफ,एवं क्विज़ का विशेष संयोजन किया गया हैं।

2. प्रमाणन:- छात्रों को कोई भी कोर्स पूरा करने के तुरंत बाद यूनिसेफ से ई-सर्टिफिकेट मिलता है।

3. यूनिसेफ और माइक्रोसॉफ्ट के लर्निंग प्लेटफॉर्म तक पहुंचने के बाद, हम लोगों को यूनिसेफ के प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर करवाते है, जहां वे कई मुफ्त पाठ्यक्रमों तक पहुंच

सकते हैं, जिन्हें अनुभवी प्रशिक्षण और कौशल संस्थानों द्वारा लॉन्च किया गया है और भविष्य में लॉन्च किया जाएगा।

4. पुरस्कार और मान्यता:- सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कार और मान्यता के माध्यम से सराहा जाएगा।

5. यह P2E प्रोग्राम पूरी तरह से निःशुल्क है।

Rising Nature

(अध्यक्ष)

राइजिंग नेचर फाउंडेशन